पर्यटन को मिलेगी नई रफ्तार, रोजगार के बढ़ेंगे अवसर

जागरण संवाददाता, बलिया: प्रसिद्ध सुरहाताल को अंतराष्ट्रीय स्तर पर रामसर दर्जा मिलने के बाद अब इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास की संभावनाएं और प्रबल हो गई हैं। प्रशासन द्वारा पहले से ही यहां कई विकास कार्य कराए जा चुके हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने से यहां पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे।

24.9 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला सुरहा ताल : सुरहा ताल लगभग 24.9 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जो बरसात में बढ़कर 42 वर्ग किलोमीटर तक हो जाता है। यह वर्षभर जलयुक्त रहने वाला क्षेत्र है, जो क्षेत्रीय जलचक्र को संतुलित रखने में अहम भूमिका निभाता है। इस वर्ष फरवरी से अब तक उत्तर प्रदेश की तीन आर्द्रभूमियों को रामसर साइट का दर्जा प्राप्त हुआ है। फरवरी में एटा स्थित पटना पक्षी विहार, अप्रैल में अलीगढ़ स्थित शेखा पक्षी विहार तथा अब सुरहा ताल को रामसर स्थल के रूप में अधिसूचित किया गया है।

सुरहाताल में नौकायन के दौरान लोग ● जागरण

अर्थव्यवस्था को मिलेगी मजबूती : **जयवीर सिंह:** प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि 'नए रामसर स्थलों की अधिसूचना से इन क्षेत्रों में घरेलू के साथ-साथ विशेष रूप से विदेशी पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, जिससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी। उन्होंने आगे कहा कि प्रदेश में आर्द्रभूमियों के संरक्षण की यह पहल न केवल जैव विविधता संरक्षण को सुदृढ़ करेगी, बल्कि प्रवासी पक्षियों के संरक्षण, जल सुरक्षा, पारिस्थितिक संतुलन तथा समुदायों की आजीविका को भी सशक्त बनाएगी। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि 'सुरहा ताल' की वजह से वीर भूमि बलिया ऐतिहासिक एवं स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है।

गंगा और सरयू के बीच के खादर क्षेत्र में है स्थित : शहर से लगभग 17 किलोमीटर दूर बसंतपुर के समीप स्थित सुरहा ताल देश व प्रदेश के प्रमुख आर्द्रभूमि क्षेत्रों में शामिल है। जैव विविधता से समृद्ध यह जलाशय गंगा और सरयू के खादर क्षेत्र (नदी द्वारा जमा की गई नई जलोढ़ मिट्टी वाला क्षेत्र) में स्थित है, जो प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र पहले से ही जय प्रकाश नारायण पक्षी विहार के नाम से पक्षी अभयारण्य के रूप में जाना जाता है, जिसकी स्थापना वर्ष 1991 में की गई थी।